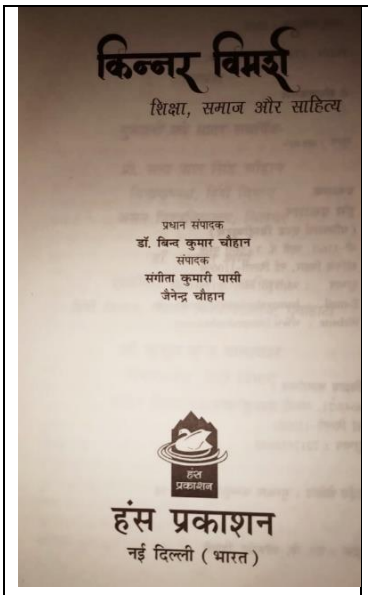

किन्नर विमर्श

शिक्षा, समाज और साहित्य

प्रधान संपादक
डॉ. बिन्द कुमार चौहान
संपादक
संगीता कुमारी पासी
जैनेन्द्र चौहान

हंस प्रकाशन
नई दिल्ली (भारत)

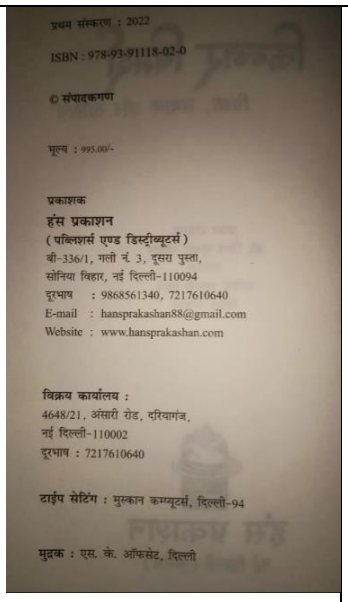

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-91118-02-0

© संपादकगण

मूल्य : 995.00/-

प्रकाशक
हंस प्रकाशन
(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)
बी-336/1, गली नं. 3, दूसरा पुस्ता,
सोनिया विहार, नई दिल्ली-110094
दूरभाष : 9868561340, 7217610640
E-mail : hansprakashan88@gmail.com
Website : www.hansprakashan.com

विक्रय कार्यालय :
4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 7217610640

टाईप सेटिंग : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-94

मुद्रक : एस. के. ऑफसेट, दिल्ली

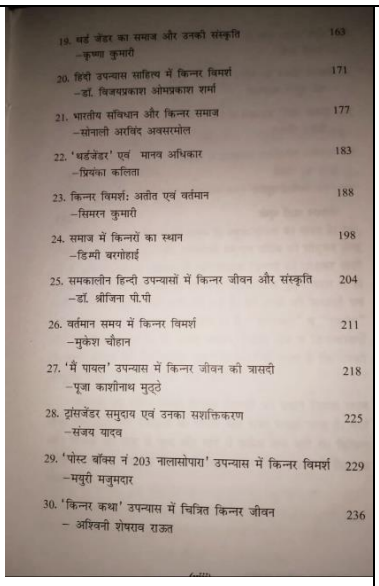

19. थर्ड जेंडर का समाज और उनकी संस्कृति 163
–कृष्णा कुमारी

20. हिरी उपन्यास साहित्य में किन्नर विमर्श 171
–डॉ. विजयप्रकाश ओमप्रकाश शर्मा

21. भारतीय संविधान और किन्नर समाज 177
–सोनाली अरविंद अवसरमोल

22. 'थर्डजेंडर' एवं मानव अधिकार 183
–प्रियंका कलिता

23. किन्नर विमर्श: अतीत एवं वर्तमान 188
–सिमरन कुमारी

24. समाज में किन्नरों का स्थान 198
–डिम्पी बरगोहाई

25. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में किन्नर जीवन और संस्कृति 204
–डॉ. श्रीजिना पी.पी

26. वर्तमान समय में किन्नर विमर्श 211
–मुकेश चौहान

27. 'मैं पायल' उपन्यास में किन्नर जीवन की त्रासदी 218
–पूजा काशीनाथ मुठ्ठे

28. ट्रांसजेंडर समुदाय एवं उनका सशक्तिकरण 225
–संजय यादव

29. 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नालासोपारा' उपन्यास में किन्नर विमर्श 229
–मयुरी मजुमदार

30. 'किन्नर कथा' उपन्यास में चित्रित किन्नर जीवन 236
– अश्विनी शेषराव राऊत

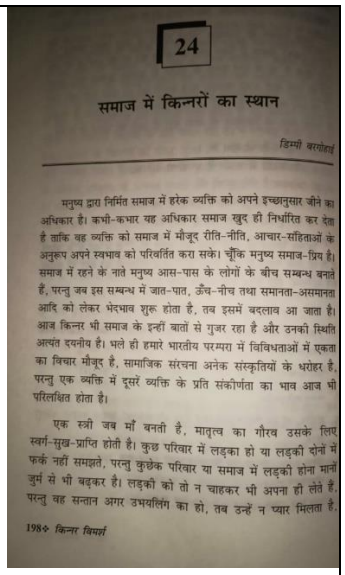

24

समाज में किन्नरों का स्थान

डिम्पी बरगोहाई

मनुष्य द्वारा निर्मित समाज में हरेक व्यक्ति को अपने इच्छानुसार जीने का अधिकार है। कभी-कभार यह अधिकार समाज खुद ही निर्धारित कर देता है ताकि वह व्यक्ति को समाज में मौजूद रीति-नीति, आचार-संहिताओं के अनुरूप अपने स्वभाव को परिवर्तित करा सके। चूँकि मनुष्य समाज-प्रिय है। समाज में रहने के नाते मनुष्य आस-पास के लोगों के बीच सम्बन्ध बनाते हैं, परन्तु जब इस सम्बन्ध में जात-पात, ऊँच-नीच तथा समानता-असमानता आदि को लेकर भेदभाव शुरू होता है, तब इसमें बदलाव आ जाता है। आज किन्नर भी समाज के इन्हीं बातों से गुजर रहा है और उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय है। भले ही हमारे भारतीय परम्परा में विविधताओं में एकता का विचार मौजूद है, सामाजिक संरचना अनेक संस्कृतियों के धरोहर है, परन्तु एक व्यक्ति में दूसरे व्यक्ति के प्रति संकीर्णता का भाव आज भी परिलक्षित होता है।

एक स्त्री जब माँ बनती है, मातृत्व का गौरव उसके लिए स्वर्ग-सुख-प्राप्ति होती है। कुछ परिवार में लड़का हो या लड़की दोनों में फर्क नहीं समझते, परन्तु कुछेक परिवार या समाज में लड़की होना माथे जुर्म से भी बढ़कर है। लड़की को तो न चाहकर भी अपना ही लेते हैं, परन्तु वह सन्तान अगर उभयलिंग का हो, तब उन्हें न प्यार मिलता है,

ADHYAYAN:
A BILINGUAL MULTIDISCIPLINARY VOLUME

Dr. Jonali Boruah
Milonjyoti Borgohain
Dr. Bhabani Saharia

11. *Bhakti* in Śaṅkaradeva's *eka śaraṇa nāma dharma*. 83
SHYAMALI HAZARIKA
12. A Critical Estimate: Gandhi and Buddha in Peace Making 93
MANIKA GOSWAMI
13. Women's Rights with Special Reference to Indian Context 105
SANGINA ISLARY
14. Chinese Pottery and its Development –A Study through the Different Dynasties 115
ANANYA KASHYAP
15. Khushwant Singh's Train to Pakistan: A Narrative of The Trauma of Partition 125
RUPJYOTI BHATTACHARJEE
16. ABC Model and 6R's Concept in Environmental Education 131
B.K. NATH & CHITTA RANJAN NATH
17. A Study on Academic Achievement of Adolescents In Relation to Their Home Environment of Kamrup (R) District 139
ANINDITA DAS
18. Indian Judiciary in 21st Century: Opportunities and Challenges 147
SATYADEEP LAHKAR
19. Ethnic Conflict and Violation of Human Rights in Political Ground with Special Reference to Assam 153
MAYA BORUAH
20. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य के उपन्यासों में असमाया लोक-विश्वास 157
मनोज कुमार कलिता
21. प्रवास में जीवन की व्यथा कथा 175
विजया सती
22. नार्थ कैरोलिना के आदिवासियो का संक्षिप्त इतिहास 187
नीलाक्षी फुकन
23. प्रेमचंद और उनके बालमनोवैज्ञानिक कहानियां : एक अध्ययन 199
डिम्पी बरगोहांई

CHAPTER TWENTY THREE

प्रेमचंद और उनके बालमनोवैज्ञानिक कहानियां : एक अध्ययन

डिम्पी बरगोहांई

भूमिका

बाल कहानी बाल साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है। बाल मनोवैज्ञानिक कहानी के द्वारा बच्चों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम माध्यम सिद्ध हुआ है। बच्चों के मन को जानने समझने और उनके द्वारा व्यक्त व्यवहारों का अध्ययन के रूप में यह बाल कहानी पर्याप्त मात्रा में सहयोग देते है।मुंशी प्रेमचन्द जी को एक विशाल साहित्यकार के रूप में हिंदी साहित्य जगत में जाना जाता है। उनके इन विशाल कथासाहित्य में विभिन्न प्रकार के पात्रों का समाहित होना स्वाभाविक है।उन्होंने अपने अनेक कहानियों में युवा एवं प्रौढ पात्रों के साथ-साथ बालक पात्रों को भी स्थान दिया है। साथ ही बालक के मन में चल रहे मनोदशाओं को और बाल मन की अभिव्यक्ति करने वाले कहानियों का सृजन किया है। इस प्रकार के कहानियाँ व्यक्ति के अंतर्मन को छू लेने वाला हैंअर्थात केवल बालकों के ही नहीं बल्कि युवाओं से लेकर वृद्ध पाठकों के मन को भी आकृष्ट करने की शक्ति विद्यमान हैं।